RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 4
सृष्टि संवत् 1960853114
28 अप्रैल 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 4, 28 अप्रैल/2 मई 2013 तदनुसार 16 वैशाख सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सदाचार

-ले० शकुन्तला शास्त्री, आदर्श नगर 533/11 ढाण्ड रोड, कैथल (हरियाणा)

हम बात-बात में सदाचार या शिष्टाचार की बात करते हैं किन्तु इसके अर्थ पर कभी विचार नहीं करते। इसी विषय पर विचार प्रस्तुत हैं।

"शिष्टानां सज्जनानां आचार: = आचरणम् एवं शिष्टाचार: सदाचार: भवति।"

सज्जन पुरुषों का आचरण जो दूसरे मनुष्यों के लिए आचरण करने योग्य होता है। सज्जन = परोपकारी मनुष्य बनने के लिए गुरु = आचार्य की चरण शरण में जाना पड़ता है। जो व्यक्ति गुरुओं की छत्र छाया में रहकर अनुशासनपूर्वक सदाचार का पाठ पढ़ते हैं उस पर आचरण करके सद् विद्या ग्रहण करते हैं। विद्या-"विद्ज्ञाने" अर्थात् जीवन का उद्देश्य जानने की विद्या = ज्ञान आवश्यक होता है। "सा विद्या या विमुक्तये" विद्या उसे कहते हैं जिसके जानने और पढ़ने से सभी प्रकार का अज्ञान अन्धेरा दूर होकर मनुष्य जीवन का कल्याण होता है और जन्म मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल जाता है।

जो गुरु या आचार्य शिष्य को अज्ञान अन्धेरे से हटाकर सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें और सभी प्रकार के कुसंस्कारों से कुसंगति से हटाकर सत्संगति व सद्-विचारों की तरफ अग्रसर कर दें। सद् साहित्य वैदिक साहित्य का अवलोकन अध्ययन करने के लिए प्रेरित करा दें वही सद्गुरु होता है।

सदाचारी बनने के लिए आचार्य की शरण में जाना अत्यन्त आवश्यक होता है।

आचार्य की परिभाषा महर्षि यास्क ने अपने निघण्टु ग्रन्थ में-निरुक्त में निम्न प्रकार से दी है-

आचार्य: कस्मात् ? = आचार्य किसे कहा जाता है-"आचारं सदाचारं गुणाचारं ग्राहयति इति आचार्य:"

"अपि च शिष्याणां छात्राणां बुद्धिषु"
सद् अर्थान् आचिनोति।

अर्थात् सदाचार को सद्गुणाचार को छात्रों को ग्रहण कराता है। और छात्रों की बुद्धि में सत्य-अर्थों को धारण करवा देता है, भर देता है ताकि छात्रों को पढ़ाए हुए पाठ कभी भी विस्मृत विस्मरण न हों।

इस प्रकार परिभाषा के अनुसार आचार्य स्वयं भी सज्जन सदाचारी सद् विद्वान् होता है और अपने सद् आचरण से सत्य वैदिक धर्म पर स्थित रहकर छात्रों को सद् शास्त्रों का यथावत् उपदेश करने वाला पुरुष ही आचार्य होता है।

निस्पृहतापूर्वक अपने विद्यार्थियों को सदैव अपने सदाचरण से सद्गुणों से अपनी तरफ आकर्षित करता है और सर्वदा छात्रों का कल्याण चाहने वाला होता है।

सत् धर्म का आचरण करने के लिए आवश्यक है वह महर्षि मनु द्वारा निरुपित धर्म के लक्षण स्मरण कर लें-

वेद: स्मृति सदाचार: स्वस्य च प्रियमात्मन:।
एतत् चतुर्विधं प्राहु: साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥

धर्म का पहला लक्षण है वेद = वेदानुकूल आचरण।

स्मृति : वेदाज्ञा के अनुकूल जो उपदेश मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में दिया है। उसके अनुकूल आचरण धर्म का दूसरा लक्षण है।

सदाचार : वेद और वेदाज्ञा के अनुकूल जो सज्जन आचरण करते हैं जो लोग अपने सदाचरण से अन्य किसी को हानि पहुंचाए बिना लोकों का उपकार करते हैं। इसलिए सदाचार धर्म का तीसरा लक्षण है।

स्वस्य च प्रियमात्मन : का अर्थ इस प्रकार है-अपनी अन्तरात्मा, मन, बुद्धि को जो आचरण अच्छा और अनुकूल लगता है वैसा ही अन्य लोगों के साथ आचरण करें। कहा भी है-

"आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्"

अर्थात् अपनी आत्मा के प्रतिकूल-विपरीत व्यवहार कभी भी किसी के साथ न करें।

सदाचारी वेदों के विद्वान् सत्य का आचरण-व्यवहार करने वाले मननशील मनुष्य होते हैं।

मनुष्य की परिभाषा इस प्रकार है-

"मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य:"

अर्थात् जो मनुष्य अपने समस्त कर्त्तव्य कर्मों को बार-बार मनन = सोच विचार करते हैं वे ही वास्तव में मनुष्य होते हैं।

किसी कवि ने कहा है-

बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै,
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै।
बिना विचारे यदि काम होगा।
कभी न अच्छा परिणाम होगा॥

ऐसे सोच विचार करके हानि लाभ पर भी विचार करके जिस से अन्य जनों का भी अहित न हो। इस प्रकार का आचरण ही सदाचार कहा जाता है। शिष्टाचार में भी सद् आचरण का ही मुख्य स्थान होता है।

श्रेष्ठ सदाचारी व्यक्तियों का आचरण मन वाणी कर्म में एक सा होता है। कहा भी है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्

किन्तु दुष्ट दुरात्मा लोगों के मन में कुछ वाणी में कुछ और कर्म में कुछ अर्थात् वे लोग सोचते कुछ हैं, कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। उनके मन वाणी कर्म में भिन्नता होती है।

मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनाम्।

इसलिए सदाचार की शिक्षा सर्वजन हितकारी सत्य उपदेश करने वाले मानव मात्र और प्राणीमात्र का उपकार करने वाले आचार्यों से जीवन उपयोगी सदाचार को समझ कर अपनों तथा दूसरों के प्रति सदाचारपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

लाहौर की कुछ पुरानी यादें : आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव

-विश्वनाथ उप-प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

नगरकीर्तन और प्रभात-फेरी : लाहौर की दो प्रमुख आर्य समाजें थीं-आर्यसमाज, अनारकली जो आर्य प्रादेशिक सभा की प्रमुख आर्यसमाज थी और जिसके प्रेरक महात्मा हंसराजजी और कर्त्ताधर्ता लाला खुशहालचंदजी (महात्मा आनंद स्वामी)। दूसरी आर्यसमाज थी वच्छोवाली आर्यसमाज, जो शहर के अंदर, शाहआलमी बाज़ार पार करने के बाद एक गली में स्थित थी। यह आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा की शीर्षस्थ आर्यसमाज थी, जिसके कर्त्ताधर्ता महाशय कृष्ण थे। इन दोनों आर्य समाजों की धाक् सारे पंजाब में थी। मैं 1935 से 1945 के दशक की बात कर रह हूँ जिसे आर्यसमाज का 'स्वर्णयुग' भी कह सकते हैं। यह सुखद संयोग था कि पंजाब के हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व, दो दैनिक पत्र करते थे। एक था, 'दैनिक मिलाप' और दूसरा 'दैनिक प्रताप'। दोनों के संचालक तथा संपादक पक्के आर्यसमाजी थे। 'प्रताप' के महाशय कृष्ण और 'मिलाप' के लाला खुशहाल चंद। इन दोनों पत्रों का प्रभाव पंजाब के नगरों और गांव-गांव तक था। इन्हीं समाचार-पत्रों के माध्यम से आर्यसमाज का डंका सारे पंजाब में बज रहा था।

इन दोनों आर्य समाजों का वार्षिकोत्सव प्रत्येक वर्ष नवम्बर के अंतिम सप्ताह में ही होते थे। शनिवार और रविवार को वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम और एक दिन पहले शुक्रवार की शाम को नगरकीर्तन, जिसे आजकल शोभायात्रा कहते हैं। दोनों ही प्रमुख समाजों के वार्षिकोत्सव एक मास के इन्हीं तीन दिनों में होते थे, इसलिए पंजाब के दूर-दूर नगरों से आने वाले उत्साही आर्यसमाजी नवम्बर के इस अंतिम सप्ताह की प्रतीक्षा किया करते थे। वे परिवारों के साथ आते थे, पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ।

पहले मैं इस संदर्श में अपने विद्यार्थी जीवन की कुछ बातें कहना चाहूंगा। जिन दिनों मैं डी.ए.वी. मिडल स्कूल में पढ़ता था, पूरे मोहनलाल रोड पर जहाँ यह स्कूल स्थित था और जहाँ सड़क के दोनों और स्कूली पुस्तकों की प्रसिद्ध दुकानें थीं, नवम्बर मास के शुरू होते ही इस सड़क पर थोड़े-थोड़े अंतर पर कपड़े के बोर्ड लग जाते थे जो सड़क के आर-पार बंधे रहते थे, जिन पर वार्षिकोत्सव की सूचना दी जाती थी। हम विद्यार्थियों के लिए इन बोर्डों का लगना और उनका हवा में फहराना एक तरह से उत्सव के समान होता था। साथ ही, मिडल स्कूल में जहाँ आर्यसमाज (अनारकली) के उत्सव के पंडाल लगते थे और अनेक आर्यसमाजी पुस्तकों की दुकानें भी, इसी स्कूल के विशाल ग्राउंड में लगती थी। उत्सव से कुछ दिन पहले ही सफाई का अभियान चलता था। स्कूल के विशाल ग्राउंड में सूखी घास फैला दी जाती थी। ऊपर दरियां बिछती थीं और चारों तरफ स्कूल की दीवार के साथ अंदर की ओर दर्शकों के बैठने के लिए भारी लकड़ी के ग्रेडिड स्टेप्स लगाए जाते थे, जैसे कि प्राय: सर्कसों और बड़े खेल के मैदानों में लगे होते हैं। इन पर बैठकर दर्शक दूर से ही सारी कार्यवाही सुविधा से देख सकते थे। स्कूल के छात्र इस सारी सजावट का खूब आनंद लेते थे।

अब आइए नगरकीर्तन की बात करें। आज के दिन कल्पना भी नहीं कर सकते कि डी.ए.वी. हाईस्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए यह अनुशासनात्मक आदेश होता था कि वे नगरकीर्तन के लिए गुलाबी रंग की पगड़ियां पहनकर आएं और ठीक चार बजे उपस्थित हों। वहाँ उनकी बाक़ायदा हाज़िरी लगाई जाती थी। अनुपस्थित विद्यार्थियों पर जुर्माना भी होता था। सारे विद्यार्थी फॉर्मेशन में पंक्तियां बनाकर चलते थे और उनके साथ अध्यापक और प्रोफेसर भी। हाथों में 'ओ३म्' की ध्वजा होती थी और आगे चलने वाले छात्रों के हाथ में आर-पार फैले हुए कपड़े के बोर्ड, जिन पर वार्षिकोत्सव की सूचना होती थी। यह नगरीकर्तन लगभग एक मील लम्बा होता था और इसमें विद्यार्थियों के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी, महात्मा, उपदेशक और लोकप्रिय भजनीक भी चलते थे। जैसे, आजकल रिपब्लिक-डे की परेड होती है, कुछ उसी तरह से बैलगाड़ियों पर, तख्तपोश लगाकर, दरी और चादर बिछाकर, उस पर उपदेशक अथवा भजनीक बैठते थे और थोड़े-थोड़े अंतर पर बैलगाड़ी रुक जाती थी और उपदेशक अथवा भजनीक का कार्यक्रम शुरू हो जाता था। उस समय के उपदेशक और भजनीक जनता की नब्ज़ पहचानते थे और उन्हें भीड़ को बांध रखने की कला आती थी। बैलगाड़ी के चारों ओर लोग इकट्ठे हो जाते थे और कार्यक्रम का आनंद लेते थे। इतने में विसल बजती थी और सभी बैलगाड़ियां दस मिनट बाद मानों अगले स्टेशन पर, खड़ी हो जाती थीं और फिर वही कार्यक्रम। यह नगरकीर्तन डी.ए.वी. कॉलेज से शुरू होकर नगर के बाज़ारों और गलियों से होता हुआ विशेषकर, लाहौर के प्रमुख बाज़ार अनारकली में अपना संदेश चारों ओर देते हुए शहर के अंतिम कोने में समाप्त होता था। लाहौर एक कॉम्पैक्ट शहर था। उन दिनों शहर के अंदर न मोटर चलती थी और न ही टांगे। शहर के बाहर की सड़कों पर जहाँ नये युग के धनी-मानी रहते थे, वहाँ टांगे और मोटरें नज़र आती थीं, वह भी बहुत कम संख्या में। इस नगरकीर्तन में पंजाब के प्रत्येक प्रमुख नगर से आए हुए आर्यसमाजों की टोलियां अपने-अपने झण्डे लहराती हुई, और अपने नगर की पहचान देते हुए पैदल चलती थीं। कई उत्साही आर्यसमाजी गले में ढोलकियां लटका कर चलते थे और ढोलकी बजाकर गाने गाते थे। इस नगरकीर्तन में पंजाब के प्राय: सभी प्रमुख नगरों के दर्शन हो जाते थे, उनके पहरावे और गाने के ढंग से। जैसे, फ्रंटियर प्रदेश-रावलपिंडी, डेरा इस्माइल खां, डेरा गाज़ी खां, कोहाट, कोयटा आदि से जो आर्यसमाजें आती थीं, उन्होंने कुल्ले और रेशमी पगड़ियां पहनी होती थीं। मिंटगुमरी, मुल्तान से जो आते थे, उन्होंने सलवारें और रंग-बिरंगी कमीज़ें पहनी होती थीं। इसी प्रकार अन्य शहरों के पहरावे देखने और बोलियां सुनने को मिलती थीं। उन दिनों नगरकीर्तन में जो भजन गाए जाते थे, वे इस प्रकार थे.....

'हम दयानन्द के सैनिक हैं,
दुनिया में धूम मचा देंगे
यदि पत्थर आए रास्ते में, ढोलक
से उसे हटा देंगे।' अथवा
दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।
अथवा
वेदां वाल्या ऋषिया तेरे आवन
दी लोड़। अथवा
जग विच धुम्मा पइयां दयानन्द
तेरियां अथवा
सिर जावे ताँ जावे, मेरा वैदिक
धर्म न जावे।

यही गीत विद्यार्थियों में भी बांट दिये जाते थे, वे भी समवेत स्वरों में इन गीतों को गाते हुए सारे शहर की परिक्रमा करते थे। इस नगरकीर्तन से मानों सारा शहर आनंदित हो उठता था और एक नया उत्साह जाग उठता था कि वार्षिकोत्सव में अवश्य जाएंगे। शायद इसी कारण वार्षिकोत्सव में इतनी अधिक भीड़ भी होती थी। शुक्रवार की रात को आर्यसमाज के स्टार संगीतज्ञ जैसे, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, देसराज, संतरामजी की भजनमंडली, चिमटा भजनमंडली तथा अन्य संगीत कार्यक्रम देते थे। ये कार्यक्रम रात के ग्यारह बजे तक चलते थे और इसमें इतनी भीड़ उमड़ती थी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी।

वार्षिकोत्सव से एक सप्ताह पहले नगर में प्रभात-फेरी लगती थी अर्थात् लाहौर की विभिन्न आर्यसमाजों के आर्यसमाजी पुरुष और स्त्रियां सुबह छह बजे से आठ बजे तक अपने आसपास के गली-मोहल्ले में भजन गाते थे और उत्सव की सूचना भी देते थे। आज ये सब बातें लुप्त हो गयी हैं।

इन्हीं उत्सवों में मैंने महात्मा हंसराजजी, प्रिंसिपल दीवानचंद (कानपुर वाले), आचार्य ऋषिराम, आचार्य विश्वबंधु, आचार्य रामदेव, पं. भगवत दत्त, स्वामी स्वतंत्रतानंदजी, स्वामी सर्वदानंदजी, स्वामी वेदानंदजी, पं. बुद्धदेवजी विद्यालंकार, पं. बुद्धदेव (मीरपुरी), ठाकुर अमरसिंह आदि विद्वानों के प्रवचन सुनने और दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

वार्षिकोत्सव के दिनों में उत्सव के प्रांगण में ही पुस्तकों की एक तरह से नुमाइश-सी लग जाती थी, जहाँ आर्य समाजिक साहित्य और विद्वानों की नई से नई पुस्तकें लोग बड़े चाव से खरीदते थे। आर्य परिवारों में आर्यसमाज का संस्कार इन्हीं उत्सवों के कारण भी बढ़ा था। प्राय: सारे दिन ही कार्यक्रम बनाकर परिवार आते थे। वहीं ऋषि-लंगर में भोजन करते थे। बाहर से आने वाले अतिथियों को भी बहुत सुविधा रहती थी, उनके खाने-पीने, ठहरने की उत्तम व्यवस्था रहती थी। दोनों समाजों के उत्सवों के स्थानों में अंतर भी लगभग दो-तीन फर्लांग का ही था। सारा समय दोनों स्थानों को जोड़ने वाली सड़क पर दर्शकों का तांता लगा रहता था।

था तो ये वार्षिकोत्सव दो ही दिन का और नगरकीर्तन केवल दोपहर बाद आधे दिन का, परंतु इसकी धूम और इसका व्यापक असर तो कई महीने चलता रहता था। अंग्रेज़ी का एक शब्द है, 'वाइब्रेशन' अर्थात् इस वार्षिकोत्सव की गूँज बहुत दिनों तक सुनाई देती थी। वह आर्यसमाज का 'स्वर्णयुग' था। वे दिन हवा हो गये अब तो स्मृतियां ही शेष हैं।

सम्पादकीय.....

26 अप्रैल जन्मदिवस पर विशेष–

अद्भुत व्यक्तित्व-गुरूदत्त विद्यार्थी

जो व्यक्ति विधाता के यहाँ से मात्र छब्बीस वर्ष की अल्पायु लेकर आया हो और इस अत्यन्त संक्षिप्त जीवनावधि में लेखन, शोध व अध्ययन के साथ-साथ शिक्षा तथा समाज सेवा के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य करें, उसकी प्रतिभा हिम्मत तथा कार्यक्षमता की प्रशंसा तो होनी ही चाहिए। लोकसेवा के महत्त्वपूर्व कार्य करने के लिए लम्बी आयु प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। यदि पुरूषार्थी व्यक्ति जीवन के आरम्भ में ही अपने कार्य और पुरूषार्थ की रूपरेखा निश्चित कर ले तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यह तथ्य आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान, वेदादि शास्त्रों के अद्भुत प्रवक्ता, धर्म प्रचार के लिए पराकाष्ठा की लगन रखने वाले पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के जीवन से सिद्ध होता है। पं. गुरूदत्त का जीवन छब्बीस वर्ष की अल्पाब्धि का ही था, तथापि इस अत्यन्त अल्प काल में उन्होंने अध्ययन, लेखन, संगठन तथा धर्म प्रचार का जो कार्य कर दिखाया वह सौ वर्ष तक जीने वाले लोगों के लिए भी असंभव है।

आर्य समाज का सूर्य महर्षि दयानन्द थे उनसे प्रकाश पाकर आर्य समाज के गगन में कई नक्षत्रों ने अपना प्रकाश फैलाया है। ऐसे ही नक्षत्रों में एक पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का अपना एक विशेष स्थान है। पं. गुरूदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ को मुल्तान में लाला रामकृष्ण के यहाँ हुआ। अध्ययन में उनकी रूचि बचपन से ही थी। गुरूदत्त ने मुलतान से मैट्रिक की परीक्षा पास की और उच्च शिक्षा के लिए लाहौर के सरकारी कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, गुरूदत्त विद्यार्थी, राजा नरेन्द्रनाथ तथा द्वारका दास लाहौर में इकट्ठे पढ़ते हुए सभी सहपाठी रहे और सभी ने समाज सेवा व राष्ट्र सेवा का महान कार्य किया। गुरूदत्त विद्यार्थी पर भी आर्य समाज का प्रभाव पड़ा परन्तु तर्कबुद्धि होने के कारण नास्तिक बन गए परन्तु फिर भी आर्य समाज के सदस्य बन गए।

सन् १८८३ में जब महर्षि दयानन्द बीमार पड़े थे तो उस समय लाहौर आर्य समाज ने उनकी सेवा के लिए गुरूदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास जी को अजमेर भेजा। उस समय गुरूदत्त विद्यार्थी की आयु मात्र २० वर्ष की थी परन्तु उनकी विचार शक्ति प्रौढ़ लोगों के समान थी। ऐसे समय में गुरूदत्त जी का अजमेर जाना और महर्षि दयानन्द की मृत्यु के दृश्य को देखकर और उनको वेद मन्त्रों का पाठ करते देखकर तथा उनके मुख से निकले अन्तिम शब्दों को सुनकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक गुरूदत्त बन गया। उन्हें विश्वास हो गया कि परमात्मा की व्यवस्था सारे संसार में है और परमात्मा एक महान सत्ता है। इस तरह की घटनाऐं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कई बार घटती हैं परन्तु जो मनुष्य 'यो जागार : तमृच : कामयन्ते' इस वेद वाक्य के अनुसार जागरूक रहते हैं, अपने अन्दर के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करते हुए ज्ञान रूपी प्रकाश से अपनी आत्मा को प्रकाशित करते हैं वही महान बन जाते हैं।

अजमेर से लाहौर आकर गुरूदत्त रात-दिन आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करने लग गए। उनके व्याख्यान बहुत प्रभावशाली हुआ करते थे। वह अंग्रेजी में भी धाराप्रवाह बोलते थे। संस्कृत के भी वह एक अच्छे ज्ञाता थे। महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु के पश्चात लाहौर में जो शोक सभा हुई उसमें स्वामी जी के स्मारक के रूप में उनकी स्मृति के रूप में डीएवी स्कूल व कॉलेज खोलने का निश्चय किया गया। इसके लिए जहाँ महात्मा हंसराज जी ने सारा जीवन दे दिया वहां उनके दूसरे साथी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने भी अपना सारा जीवन इन शिक्षा संस्थाओं की उन्नति के लिए लगा दिया।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी आर्य समाज के सबसे कम आयु के नेता थे। वह आर्य समाज को एक हीरे के रूप में मिले थे। काश परमात्मा उन्हें दीर्घायु प्रदान कर देता। उनकी मृत्यु पर २५ मार्च १८९० में आर्य पत्रिका में एक लेख छपा था जिसमें लिखा था कि-गुरूदत्त के सिवाए ऐसा कौन है जो ईश्वरीय वाक्य वेद तथा उसके जानकार ऋषि-मुनियों के माध्यम से सर्वोच्च परमात्म तत्व संसार को पहुँचाने के लिए लालायित था। हे गुरूदत्त इस घड़ी तुम्हारा वियोग अपूरणीय है। जिस कार्य को करने की क्षमता तुममें थी वैसा अब कोई व्यक्ति इस क्षेत्र में दिखाई नहीं देता। हे युवक तुम्हारी आभा सचमुच महान थी, तुम्हारा अल्प जीवन अत्यन्त प्रकाशमान था हालांकि तुम स्वयं भी इस सत्य को नहीं जानते थे। तुम्हारे लक्ष्य ऊँचे तथा महान थे। तुमने गौतम, पतंजलि, व्यास, याज्ञवल्क्य और स्वामी दयानन्द को अपना आदर्श बनाया था। उन्हीं के संसर्ग में रहने से तुम्हें आनन्द मिलता था। वास्तव में गुरूदत्त विद्यार्थी युवावस्था में ज्ञान के महान भण्डार थे। वैदिक मैगजीन में उनके लिखे सभी लेख बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी प्रभावित करते थे। उनकी लेखनी से लिखा एक-एक लेख बहुत ही प्रभावशाली हुआ करता था वह लेखनी के भी धनी थे और वाणी के भी धनी थे। काश उन्हें आर्य समाज की सेवा करने के लिए कुछ समय और मिल जाता तो आर्य समाज का स्वरूप ही कुछ और होता। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द तथा उस समय के अन्य नेता आर्य समाज की नींव के पत्थर हैं। इन्हीं शक्तिशाली पत्थरों की नींव पर आर्य समाज का भवन खड़ा है। इनको पं. गुरूदत्त जैसे महान मनीषियों, त्यागी, तपस्वी, विद्वानों, सन्यासियों, महात्माओं ने सींचा है। हम पं. गुरूदत्त के जन्मदिवस पर आर्य समाज की उन्नति के लिए व्रत लें।

-श्री प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामंत्री

विश्व में यज्ञ हो रहा है

-ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय, जालन्धर

यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
बसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धवि :।।६।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरूषं जातमग्रत :।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋष्यश्च ये।।७।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत : सम्भृतं पृष्दाज्यम्।।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।८।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।९।।
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजायवः।।१०।।

६. जिस ग्रहण करने योग्य पुरूष के द्वारा देवताओं ने यज्ञ का विस्तार किया, उसमें बसन्त घी, ग्रीष्म ईंधन और शरद् ऋतु सामग्री बनी।

७. उस सबसे पहले विद्यमान, यज्ञरूप पूजनीय पुरूष को मन रूपी यज्ञवेदी पर देव, साध्य और ऋषियों ने उसी के उपदेश से यज्ञ किया।

८. उस सब कुछ प्रदान करने वाले पूज्य परमात्मा से घी आदि वस्तुएं सिद्ध हुई। वायु में विचरण करने वाले पक्षी, वन में निवास करने वाले सिंह आदि और ग्राम में बसने वाले पशु उसी ने पैदा किये।

९. उसी यज्ञ रूप परमात्मा से ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए। उसी से अथर्ववेद उत्पन्न हुआ और उसी से सामवेद उत्पन्न हुआ।

१०. उसी से घोड़े और ऊपर नीचे दोनों और दांतों वाले पशु उत्पन्न हुए। उसी से गायें, भेड़, बकरी, उत्पन्न हुई।

इन पांच मन्त्रों में यज्ञ का विचार विशेष रूप से प्रमुख है। भारतीय सभ्यता का आधार वेदों पर है, इस सभ्यता की नींव यज्ञ पर है। बच्चे के जन्म से पूर्व यज्ञ प्रारम्भ होता है, और जीवन के अन्त तक चलता है। अन्तिम यज्ञ में तो मनुष्य का शरीर ही आहुति बनता है। हमारी धर्म पुस्तकों में कहा गया है कि मानव जीवन ही यज्ञ रूप है। हम पूर्व कह चुके हैं कि मानव बहुत छोटे पैमाने पर विश्व का नमूना ही है। इन मन्त्रों में कहा गया है कि विश्व और पृथ्वी, जिस पर हम रहते हैं, एक प्रकार का यज्ञ है और परम पुरूष इस यज्ञ का याज्ञक है। मनुष्य जो यज्ञ करता है, उसमें अपनी सम्पति का कुछ भाग देकर अग्नि के द्वारा वायुमण्डल को शुद्ध करना होता है। यह एक प्रकार से देव ऋण का चुकाना है। मैं जीवन कायम रखने के लिए खाता पीता हूँ, सांस लेता हूं। जो कुछ अन्दर जाता है, वह सारा अन्दर तो नहीं रहता, न सारा शरीर का भाग बनता है। उसका बहुत बड़ा भाग बाहर फैंक दिया जाता है, क्योंकि या तो वह काम का नहीं या अपना काम कर चुका होता है। इतना भेद हो जाता है कि पदार्थ अन्दर जाते समय स्वच्छ होते हैं, बाहर आते समय गन्दे होते हैं। अन्दर अन्न और फल जाता है और बाहर मल आता है। अन्दर दूध और जल जाता है बाहर मूत्र व पसीना आता है। वायु भी बाहर मैली होकर आती है। हम अपने वायुमण्डल को प्रतिक्षण मैला करते हैं। यज्ञ के विचार के पीछे मर्म यही है कि हम अपनी की हुई हानि को पूरा करने के लिए कुछ करें। परन्तु सौ में से शायद 99 प्रतिशत मनुष्य इस ऋण को चुकाने के लिए कुछ नहीं करते। फिर यह खराबी दूर कैसे होती है ? मनुष्य याजक हों भी, तो उनका यज्ञ छोटा सा यज्ञ ही हो सकता है। परमात्मा स्वयं एक महान, अति महान यज्ञ निरन्तर कर रहा है। वह सबसे बड़ा याजक है। उसका यज्ञ इतना विस्तृत और उदार है कि वह स्वयं यज्ञस्वरूप ही है उसकी देन का कोई पारावार नहीं। वायुमण्डल को ही लें। सूर्य कुण्ड की अग्नि का काम करता है। यह अपवित्रता को दूर करता है, गली सड़ी चीजों को पुनर्जीवित करके वनस्पति और औषध बना देता है। वायुमण्डल के स्वच्छ बनाने में ताप के घटने बढ़ने और ऋतु परिवर्तन का भी बहुत महत्व है।

वायुमण्डल के स्वच्छ करने का अर्थ क्या है ? जब हम हवन करते हैं तो कुण्ड के ऊपर की और निकट की वायु गर्म हो जाती है। हल्की वायु ऊपर उठती है, क्योंकि जहां गति में कोई रोक न हो वहां स्वभाव से ही भारी चीज नीचे आ जाती है, और हल्की चीज ऊपर रह जाती व पहुँच जाती है। कुण्ड के ऊपर और निकट की वायु के ऊपर जाने से वहां शून्य पैदा हो जाता है। प्रकृति ऐसे शून्य को सहार नहीं सकती। इसका परिणाम यह होता है कि इर्द-गिर्द से ठण्डी, भारी वायु शून्य को भरने के लिए कुंड पर आ पहुँचती है। यह भी गर्म होकर ऊपर उठ जाती है और इस तरह यह क्रम जारी रहता है। यह वायु उन कीटों को जो अपवित्रता तथा रोग का कारण होते हैं पीछे नहीं छोड़ आती बल्कि उन्हें अपने साथ खींच लाती हैं। ऐसे कीटों को जलाना, उन्हें खत्म करना, हवन का प्रयोजन और फल है। यही कार्य बड़े पैमाने पर सूर्य करता है। जहां गर्मी अधिक होती है, वहां वायु ऊपर उठाती है। उसका स्थान लेने के लिए दूर से ठण्डी वायु वेग से गर्म स्थान पर पहुंचती है, इसे आंधी कहते हैं। गर्मी सर्दी का भेद, ऋतु परिवर्तन और वायु की तेज गति उस महान यज्ञ के साधन हैं, जो वायुमण्डल को निरन्तर शुद्ध कर रहा है। मानव यज्ञ से उदासीन तो वह हो सकते हैं, परन्तु संसार में रहते हुए वे उस विस्तृत यज्ञ के अमल से भाग नहीं सकते, जो इस पृथ्वी पर निरन्तर हो रहा है और जिसका उद्देश्य यह है कि हानिकारक प्राणियों को समाप्त करें।

अब हम इन पांच मन्त्रों को फिर पढ़ें, और देखें कि वह क्या शिक्षा देतें हैं। छठे मन्त्र में कहा गया है कि पृथ्वी पर एक यज्ञ हो रहा है, और बसन्त, ग्रीष्म तथा शरद ऋतु उस यज्ञ की सामग्री हैं। सातवें मन्त्र में कहा है कि परम पुरूष याजक के यज्ञ पर मनन करने के फलस्वरूप भले पुरूषों, देवों साध्यों और ऋषियों ने भी यज्ञ किया। ८ वें. ९ वें और १० वें मन्त्रों में कहा गया है कि इस महान यज्ञ के फलस्वरूप सारे खाद्य पदार्थ और पशु-पक्षी पैदा हुए। यह सब कुछ मनुष्यों के लिए हितकर है, परन्तु मनुष्य का सबसे बड़ा सखा सहायक तो सत्य ज्ञान है। उसके लिए परम पुरूष ने चारों वेदों का ज्ञान दिया। जो कुछ हमारे जीवन को कायम रखता है, हमारे जीवन को उन्नति की ओर ले जाता है, वह सब उसी प्रभु के महान यज्ञ का प्रताप है।

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज टैगोर नगर सिविल लाईन लुधियाना द्वारा रविवार 5 मई 2013 को गायत्री महायज्ञ का आयोजन टैगोर नगर पार्क में किया जा रहा है। आर्य समाज के प्रधान श्री वैणी प्रसाद शास्त्री जी ने सूचना दी है कि वेद प्रचार घर-घर पहुंचाने का माध्यम यज्ञ ही है जिसमें दूसरे लोग भी श्रद्धा से भाग लेते हैं। आर्य समाज सिविल लाईन टैगोर नगर द्वारा वर्ष में चार बार ऐसे बड़े यज्ञ का आयोजन किया जाता है। जिसमें टैगोर नगर के सभी भाई बहन तन, मन, धन से सहयोग करते हैं। लुधियाना के सभी अधिकारियों तथा भाई-बहनों से प्रार्थना है कि 5 मई को आर्य समाज टैगोर नगर सिविल लाईन लुधियाना में पधारें। कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज का आनन्द उठाएं। यज्ञ, भजन, प्रवचन का समय प्रातः 8:30 से 11:30 तक होगा।

-कविराज वैणी प्रसाद शास्त्री प्रधान

विज्ञान का आदि स्त्रोत व प्रेरक होने से वेद भविष्य का एकमात्र सर्वग्राह्य एवं सर्वमान्य धर्म

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

(गतांक से आगे)

यदि यह किसी मनुष्य की कल्पना होती तो वह कुछ सौ या हजार अथवा लाख वर्षों से अधिक की कल्पना नहीं कर सकता था जिसका कारण यह है कि मनुष्य की औसत आयु उन दिनों यदि लगभग 100 वर्ष की मान लें तो 20 से 100 वर्षों के बीच के लोग जो सृष्टि की आयु का अनुमान लगाते वह या तो इसे अनन्त बताते या फिर कुछ सौ, हजार या लाख वर्ष ही बता सकते थे। अत: इस सृष्टि के संबंध में वेदों व वैदिक साहित्य की जो मान्यताएं हैं, वह सर्वथा युक्तिसंगत व प्रमाणिक है।

वेद इस बात का भी संतोषजनक उत्तर देते हैं कि ईश्वर ने इस ब्राह्मण्ड की रचना क्यों की ? पहला उत्तर तो ईश्वर सर्वशक्तिमान है और वह सृष्टि की रचना कर सकता है, इस कारण उसने सृष्टि की रचना की। दूसरा कारण है कि इस ब्रह्माण्ड में प्रलयावस्था में असंख्य जीवात्माएं मूर्छित अवस्था में विद्यमान थे। उन्होंने प्रलय से पूर्व की सृष्टि के काल में जो कर्म किए थे, उनका सुख दु:ख के रूप में फल उनको दिया जाना था। यदि वह ऐसा न करता तो स्वयं निठल्ला सिद्ध होता और जीवात्माओं को उनके कर्मों का फल सुख-दुख के रूप में न मिल पाता और उसका अस्तित्व होकर भी न होने जैसा ही होता। इसके अतिरिक्त जन्म प्राप्त होने पर प्रत्येक जीवात्मा जब सुख में प्रवृत्त होता है, तो उसको उससे चार प्रकार के दु:ख मिलते हैं जो कि परिणाम-दुख, ताप-दु:ख, संस्कार-दुख, गुणवृत्तिविरोध-दुख कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त भी प्रत्येक जीवात्मा आध्यात्मिक, अधिदैविक एवं आधिभौतिक दुखों से सन्तप्त रहता है। उसको अविद्या, अभिनिवेश आदि क्लेश भी सदा सताते रहते हैं। अत: इनसे मुक्ति के लिए वह कुछ न कर पाता। इसी प्रकार से प्रकृति की भी सत्ता है परन्तु उससे सृष्टि की रचना न होने से उसका अस्तित्व होकर भी न होने जैसा होता अर्थात् ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का अस्तित्व होकर भी इन तीनों की सत्ता का होना निरर्थक होता। हम समझ सकते हैं कि यदि कहीं कोई डाक्टर हो और वहां कुछ रोगी भी हों तो यदि डाक्टर रोगियों का उपचार न करे तो उसका होना निरर्थक होता है। अत: वेदों का सृष्टि की रचना का उद्देश्य भी तर्क व प्रमाण की कसौटी पर बुद्धिसंगत व स्वीकार्य श्रेणी में आता है एवं पूर्णतया पुष्ट है। अन्य मत वालों के पास सृष्टि रचने के उद्देश्य का ऐसा युक्तिसंगत उत्तर नहीं है। इसलिए भी बुद्धिमान मनुष्यों को वेदों को स्वीकार करना चाहिए।

वेद विज्ञान के विरोधी नहीं अपितु विज्ञान के स्त्रोत, प्रेरक एवं समर्थक हैं और विज्ञान वेद से ही अस्तित्व में आया हैं क्योंकि सृष्टि के आरम्भ में ही परमात्मा ने आदि चार मनुष्य-ऋषियों को वेदों का ज्ञान देकर उन्हें बोलना, समझना व उचित-अनुचित का ज्ञान कराया था। ऋग्वेद के पहले ही मन्त्र में अग्नि, जो कि एक भौतिक पदार्थ व ऊर्जा है, का अध्ययन कर इससे लाभ प्राप्त करने की शिक्षा दी गई है। मन्त्र में कहा गया है कि हम अग्नि का अध्ययन करते हैं। आगे कहा गया कि यह अग्नि इस संसार रूपी यज्ञ अर्थात् संसार के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों एवं सभी प्राणियों का सर्वाधिक व पूरा-पूरा हित करने वाली अर्थात् लाभकारी है। यहां यह जानना भी उचित होगा कि अग्नि शब्द में विद्युत शब्द भी समाविष्ट है। वेद की दो अन्य वैज्ञानिक बातों का भी यहां उल्लेख करना उचित होगा। वेद के अनुसार संसार में दो प्रकार के तत्व हैं। एक चेतन और दूसरा जड़। ईश्वर व जीवात्माएं चेतन तत्व हैं एवं कारण प्रकृति एवं कार्य प्रकृति या रचा हुआ पंचभौतिक संसार जड़ है। वेद के अनुसार ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। प्रकृति भी एक अनादि, नित्य, अजन्मा, अविनाशी, सूक्ष्म, जड़ अर्थात् सुख-दुख की अनुभूति से रहित व कारण से कार्य रूप में परिवर्तित होने वाला तत्व व पदार्थ हैं। यह सारा जगत जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी एवं पृथिवीस्थ सभी भौतिक पदार्थ, सभी ग्रह व नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु आदि सम्मिलित हैं, कारण प्रकृति से बनता है। ईश्वर अपने स्वभाविक ज्ञान व बल से इस कारण प्रकृति को पूर्व कल्प की सृष्टि के अनुसार विकृति प्रदान कर वर्तमान 'सृष्टि या कार्य प्रकृति' का रूप देता है। कारण प्रकृति सत्व, रज व तम, इन तीन प्रकार के अति सूक्ष्म कणों का विशाल, जिसे अनन्त कह सकते हैं, समूह है जो आंखों से दिखाई नहीं देते। इस कारण-प्रकृति का पहला विकार व रचना महत्त्व व दूसरा अहंकार, इसके बाद पांच तन्मात्राएं, मन, बुद्धि, चित्त, 5 ज्ञानेन्द्रियां, 5 कर्मेन्द्रियां, पंच-महाभूत : पृथिवी, अग्नि, जल, वायु, आकाश आदि होते हैं जो कि ईश्वर की प्रेरणा, ज्ञान व बल या शक्ति द्वारा बनकर अस्तित्व में आते हैं। आज के वैज्ञानिक जिन्हें परमाणु मानते हैं उससे भी पूर्व की अवस्था कारण प्रकृति है। यह प्रकृति भी प्रलयावस्था में इस अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं। वेद एवं वैदिक साहित्य में प्रकृति की सत्ता व संसार की रचना आदि का जो विज्ञान वर्णित हैं वह संसार के सम्प्रदायों व मजहब आदि के ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है। इसलिए, विज्ञान व संसार की रचना से जुड़े सत्य ज्ञान व विज्ञान को जानने के लिए भी विश्व के सभी मनुष्यों को वेदों का अध्ययन कर इसे स्वीकार करना चाहिए। संसार की रचना व उत्पत्ति के साथ वेदों में विमान, तीव्र गति से चलने वाला नाना प्रकार की रक्षा सामग्री, कृषि सम्बन्धी ज्ञान, पर्यावरण रक्षा एवं आध्यात्मिक उन्नति से संबंधित यज्ञ व अग्निहोत्र का ज्ञान आदि नाना प्रकार के विषय हैं जो केवल वेदों को मानने व उसका अध्ययन करने से जाने जा सकते हैं एवं इनसे अपना जीवन सफल बनाया जा सकता है। हमारा संसार के लोगों से मात्र इतना आग्रह है कि वह वेदों, वैदिक साहित्य जिसमें महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि सम्मिलित हैं एवं इतर मत व सम्प्रदायों के ग्रन्थों का अध्ययन कर स्वयं निर्णय करें कि पूर्ण व यथार्थ सत्य क्या व कहां है और सत्य को जानकर अपने जीवन में उसका पालन कर उससे लाभ उठाना चाहिए। हमारा सुनिश्चित मत है कि आने वाले समय में कभी न कभी वेदों को उनका वास्तविक स्थान प्राप्त होगा, जैसा कि आज विज्ञान को प्राप्त है, और तभी मत-मतान्तरों से संसार में जो विषमता, लड़ाई-झगड़े आदि होते चले आ रहे हैं वह सब समाप्त होंगे और सर्वत्र शान्ति स्थापित होगी।

महर्षि दयानन्द ने विज्ञान से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण तथ्य, जो विश्व के ज्ञान व विज्ञान के साहित्य में अन्यतम है, आर्य समाज के प्रथम नियम में प्रस्तुत किया है जहां वह कहते हैं कि सब सत्य विद्याएं और जो पदार्थ विद्या से जाने जाने हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। एक अन्य नियम में वह बताते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। यहां यह ध्यातव्य है कि महर्षि दयानन्द कोई साधारण मानव नहीं थे। वह वेद एवं वैदिक साहित्य सहित संसार के सभी धार्मिक व साम्प्रदायिक ग्रन्थों के उच्च कोटि के विद्वान व साक्षात्कृतधर्मा मनीषी थे। अत: उनका कथन संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिए विचारणीय एवं स्वीकारणीय है क्योंकि यह प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध है। सत्य का ग्रहण करना और असत्य को छोड़ना सभी मनुष्यों का पहला व अन्तिम धर्म है। आईए हम सभी इस धर्म का पालन करें।

मोगा में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

दिनांक 11 अप्रैल 2013 दिन वीरवार को आर्य माडल हाई स्कूल मोगा ने आर्य समाज मोगा में नव सम्वतसर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस सम्बन्ध में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल के प्रबन्धक श्री जगदीश कुमार जी अग्रवाल, प्रिंसीपल श्रीमती जनक मजीठिया, स्टाफ के सदस्य व विद्यार्थियों ने भाग लिया। श्री दिवाकर भारती जी ने बच्चों को नव सम्वतसर के महत्व के बारे में जानकारी दी। श्री प्रियतम देव जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन के बारे में अपने विचार रखे व बच्चों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिये कहा।

-प्रिंसीपल आर्य माडल हाई स्कूल

लव कुमार सूद सर्वसम्मति से आर्य समाज सरहिन्द के प्रधान चुने गये

आर्य समाज मंदिर सरहिन्द का वार्षिक चुनाव दिनांक 17 अप्रैल 2013 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल एवं श्री ललित शर्मा प्रबन्धक दोआबा आर्य सी.सै.स्कूल नवांशहर की देखरेख में सम्पन्न हुआ। श्री लव कुमार सूद को सर्वसम्मति से वर्ष 2013-14 के लिये प्रधान चुन लिया गया। इसी के साथ उन्हें अन्य पदाधिकारियों के चुनने का अधिकार भी दिया गया। इस अवसर पर सर्वश्री रमेश कुमार सूद, श्री राजिन्द्र शौरी, प्रो. बलराम सूद, श्री राकेश सूद, श्री योगराज सूद, प्रो. अशोक सूद, श्री अतुल सूद, श्री अमरजीत सूद, श्री नवनीत वर्मा इत्यादि उपस्थित थे। श्री लव कुमार जी सूद ने सभी उपस्थित सदस्यों एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का धन्यवाद किया।

-सुरेन्द्र मोहन तेजपाल सभा मंत्री

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर का वार्षिक चुनाव श्री सरदारी लाल जी आर्य रतन एवं श्री कमल किशोर जी की अध्यक्षता में दिनांक 14 अप्रैल 2013 को सर्वसम्मति से गत चल रही कैबिनेट को काम करते रहने का मौका दिया गया जिसमें श्री राज कुमार जी को प्रधान, श्री सुदेश रत्न मंत्री, श्री पंडित मनोहर लाल जी को कोषाध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं। सभा की ओर से श्री अशोक परूथी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब उपस्थित थे। इस अवसर पर शिवरात्रि के उत्सव को सफल बनाने में सहयोग करने वाले महानुभावों को सम्मानित किया गया जिसमें विशेष रूप से श्री अविनाश घई, श्री महिन्द्र भगत उप प्रधान भाजपा पंजाब का सम्मान किया गया और बाद में प्रीति भोज का भी आयोजन किया गया। सारा कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व श्री पंडित मनोहर लाल जी ने आर्य समाज का गत वर्ष का लेखा जोखा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया।

-सुदेश कुमार मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज चौक बठिंडा का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिंडा का वार्षिक चुनाव दिनांक 19 अप्रैल 2013 को प्रो. स्वतंत्र कुमार जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री निहाल चंद जी एडवोकेट 55 मतों में से 35 मत प्राप्त करके प्रधान चुने गये। एक अन्य प्रस्ताव में श्री निहाल चंद जी एडवोकेट प्रधान आर्य समाज को अन्य पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। शांति पाठ के पश्चात सभा सम्पन्न हुई।

-प्रो. स्वतंत्र कुमार सभा उप प्रधान

आर्य समाज स्थापना दिवस, नव सम्वत एवं वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

आर्य समाज मालेरकोटला के प्रांगण में प्रधान अनिल मैगन एवं मन्त्री सुनीता मैग्न की अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस, नव सम्वत एवं वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें छींटावाला से आए महान् संत स्वामी ब्रह्मवेश जी मुख्य मेहमान के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर शास्त्री दयानिधि द्वारा पूरी विधि-विधान से हवन यज्ञ करवाया गया जिसमें उपस्थित महानुभावों ने विश्व शान्ति हेतु आहुतियां डालीं।

समाज के प्रचार मन्त्री एवं प्रसिद्ध समाज सेवक तरसेम गुप्ता ने बताया कि नव सम्वत के दिन पर ही ऋषि दयानन्द ने समाज में फैली कुरीतियों व बुराईयों को दूर करने के लिए सबसे पहले सन् 1875 ई० में मुम्बई नगर में आर्य समाज की स्थापना की थी। समागम में मन्त्री सुनीता मैग्न ने ऋषि दयानन्द सम्बन्धी भजन सुनाकर लोगों को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। समाज के लीगर एडवाईज़र भुपेन्द्र कौशल ने कहा कि जैसे दो पहियों के बिना गाड़ी नहीं चल सकती उसी प्रकार स्त्रियों एवं पुरुषों के इकट्ठे सहयोग के बिना समाज उन्नति नहीं कर सकता। अन्त में स्वामी ब्रह्मवेश जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन एवं उनके समाज संबंधी किए गए सुधारों पर रोशनी डाली। वार्षिक परीक्षा में श्रेणी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहने वाले विद्यार्थियों को इनाम देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अनिल मैग्न, सुनीता मैग्न, तरसेम गुप्ता, लीला सूद, कृष्णा आर्य, प्रेम पासी, रणवीर बत्ता, संदीप सूद, प्रमोध जैन, डा. सुनीता शर्मा, डा. रीचा शर्मा, एडवोकेट भुपेन्द्र कौशल, प्रि. देवेन्द्र कौशल, प्रि. हीरा शर्मा, रौशन बत्ता, संदीप सूद, संदीप कौशल, सत्य पाल गुप्ता, कविता जिन्दल, अन्जना, सीमा पुरी, वेद प्रकाश ढींगरा, सुमन भटीजा, प्रो. भट्ठी, समन्त तलवानी, रमेश भारती, वीणा आहूजा, हैडमास्टर राज कुमार, राकेश वर्मा, विनोद शर्मा, वनारसी लाल, विशाल गौतम, सरोज सिंगला, आशा रानी, सीमा जिन्दल, आरती ज्योति, संतोष दीवान, दयानिधि शास्त्री आदि महानुभावों ने भाग लिया। समागम के अन्त में ऋषि प्रसाद के रूप में लंगर वितरित किया गया।

-तरसेम गुप्ता (प्रचार मंत्री)

अखण्ड गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

वैसाखी के पर्व पर स्व: श्री कृष्ण शरण गुप्ता परिवार ने अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। श्री अनन्त शरण जिंदल देहली, श्रीमती कान्ता गुप्ता, सत्य शरण गुप्ता प्रधान आर्य समाज, श्री विश्वामित्र सर्वमित्र, आर्य मित्र गुप्ता ने अपने निवास स्थान "भीमसेन आर्य भवन" में 13-4-13 शनिवार से 14-4-13 रविवार तक इस गायत्री यज्ञ द्वारा चारों वेदों के शतक की आहुतियां डालीं। ब्रह्मा श्री विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री जय प्रकाश शास्त्री, ए. एस. हाई स्कूल, श्री अरुण कुमार भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री संदीप शास्त्री, महर्षि दयानन्द मठ (वेद मंदिर) ढन्न मुहल्ला जालन्धर तथा श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट के दो विद्यार्थियों के साथ इस महान यज्ञ का संचालन किया। यजमान श्री विश्वामित्र शशिबाला श्री सर्वमित्र संगीता अग्रवाल, श्री अनन्त शरण जिंदल ऊषा जिंदल बने। साहिल अग्रवाल, रमेश सिंगला सुधा, करण कुमार, अंजू, अविनाश गुप्ता, चेतन अग्रवाल रितु, आशा अक्षित गर्ग, राकेश गर्ग अंकुर अमलोंह से, लुधियाना से श्री प्रेम गर्ग, जंग बहादुर, कमल किशोर, देवेन्द्र गर्ग, मोगा से राजकुमार जी सभी सपरिवार पधारे। गणमान्यों में श्री रवि मिश्रा, श्री स्वीट कुमार, सुखदेव जी, श्रीमती आशा गर्ग, श्रीमती ऊषा भनोट, अरुण अग्रवाल, सुभाष अग्रवाल, गगन अग्रवाल, नरेन्द्र गुप्ता, किशोरी लाल, श्री सुभाष मिसरा, श्री दुर्गादास मिश्रा, बलदेव, अनिल अम्बा दत्त मिश्रा तथा अनेक अन्य गणमान्य लोग आए। आर्य समाज अलावलपुर के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री परमानन्द कक्कड़ ने यज्ञ की व्यवस्था संभाली। श्रद्धेय स्वामी महेश पुरी जी ने विशेष रूप से आकर आशीर्वाद दिया। आहुतियां प्रदान करने में तो सभी का उत्साह देखने योग्य था। वर्षों के बाद यह आयोजन हुआ सभी ने बहुत पसन्द किया और कहा पारिवारिक वातावरण को सुधारने में ऐसे कार्यक्रम बहुत लाभदायक होते हैं।

-सत्यशरण गुप्ता भीमसेन आर्य भवन, अलावलपुर

शोक समाचार

श्री बलदेव राज बांसल कोषाध्यक्ष आर्य समाज मोगा की पूज्य माता श्रीमती प्रवीण बांसल का दिनांक 17 अप्रैल 2013 को देहावसान हो गया। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए हवन यज्ञ दिनांक 28 अप्रैल 2013 को आर्य समाज मोगा में रखा गया है।

तपा में आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज के तत्वावधान में आर्य समाज के प्रधान डा० राजकुमार शर्मा व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की अन्तरंग सभा के सदस्य सी. मारकण्डा तथा प्रिंसीपल श्री सुरेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में आर्य समाज का 138वां स्थापना दिवस व विक्रमी संवत 2070 के उपलक्ष्य में एक समारोह किया गया। प्रात: काल सर्वप्रथम गायत्री महामन्त्र व सरस्वती वंदना की गई। प्रिंसीपल सुरेन्द्र शर्मा ने आर्य समाज के स्थापना दिवस पर जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि अगर 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना न की होती तो आज भारतीय प्राचीन अमृतमयी संस्कृति व सभ्यता के प्रतीक विक्रमी संवत के महत्त्व को युवा वर्ग कैसे जान सकता था। महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैदिक पद्धति के कारण ही आर्य दयानन्द ऐंगलो वैदिक शिक्षण संस्थाएं आज लोगों को अंधकार से प्रकाश मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती रही है। 400 वर्ष तक जीने का अरमान रखने वाले देव दयानन्द को जब 16 बार जहर व अनेक नुकसान पहुंचाने वाले ढंगों से अहसास हो गया था कि वो लम्बी उम्र नहीं जी पाएंगे। इसलिए उन्होंने आज के पावन दिवस पर आर्य समाज की स्थापना करके इसके महत्त्व को और बढ़ा दिया।

आर्य समाज के प्रधान डा० राजकुमार शर्मा ने अपने प्रधानगी भाषण में कहा कि सभी को सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताए मार्ग पर चल कर श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना चाहिए। इस अवसर पर समाज के मन्त्री बिहारी लाल, श्री राम पाल शर्मा, श्री मकखन सिंह ताजोके, मास्टर राम गोपाल शर्मा, श्रीमती कमलेश रानी, श्रीमती सन्तोष शर्मा, श्रीमती मीना रानी, बलविन्द्र कौर, अमरजीत कौर, कमलेश बदरा व पंडित हरबंस लाल भी उपस्थित थे। **-प्रिंसीपल सुरेन्द्र शर्मा तपा (बरनाला)**

आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया

दिनांक 11-4-2013 दिन वीरवार को आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल बठिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव सम्वत्सर के उपलक्ष्य में एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल की प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री कुलवन्त राय अग्रवाल, मैनेजर निहाल चन्द, स्कूल की प्रिंसीपल, अध्यापिकाओं और सभी बच्चों ने भाग लिया। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा कुमारी ने बच्चों को नव सम्वत्सर और आर्य समाज के स्थापना दिवस के बारे में पूरी तरह समझाया। इसके बाद स्कूल के मैनेजर निहाल चन्द सचदेवा जी ने नए सम्वत्सर 2070 के बारे में बताया कि इसको विक्रमी सम्वत् के बारे में क्यों जाना जाता है ? इसके इलावा साका सम्वत् 1935 अंग्रेज़ी साल 2013 और मुसलमानों का हिजरी सम्वत् 1436 पर प्रकाश डालते हुए इसके साथ आर्य समाज स्थापना दिवस के बारे में बताया। शान्ति पाठ के बाद बच्चों में प्रसाद बांटा गया।

आर्य समाज अबोहर में विक्रमी नव सम्वत् व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज अबोहर में नव सम्वत् तथा आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया। इस अवसर पर पंडित जन्मजय शास्त्री जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री राजपाल व श्रीमती रेणू जी तथा समाज के सभी अधिकारी व सदस्य गण यज्ञाग्नि में आहुतियां डालीं। यज्ञ के पश्चात् समाज के महामंत्री सुशील कुमार मेहता जी ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाकर सबका दिल जीत लिया तथा सबको नव सम्वत् व आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई दी। इस मौके पर आर्य समाज के प्रधान सोहन लाल सेतिया, केवल कृष्ण सेतिया, मुरारी लाल दाबड़ा, सुरिन्द्र कुमार गिल्होत्रा, वेद प्रकाश जुनेजा, सत्यप्रकाश चुघ, देवेन्द्र कुमार चेटेले, प्रदीप गांधी, श्रीमती सुशीला सेतिया, सुकेश मेहता, अनीता चुघ तथा बी. एल. वैदिक पाठशाला व आर्य पुत्री पाठशाला की अध्यापिकाएं उपस्थित थीं।

होली के पावन पर्व पर आदर्श कन्या गुरुकुल की दो विदुषी कन्याओं ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की

आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी गुरुकुल आश्रम आम सेना आदि अनेकों संस्थाओं के संस्थापक उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने वैदिक धर्म एवं देश की सेवा करने के लिए नए कार्यकताओं को तैयार करने के लिए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने की परम्परा प्रारम्भ कर रखी है, इस पर अब तक पचासों युवक दीक्षा लेकर देश के विभिन्न भागों में एवं गुरुकुल द्वारा संचालित संस्थाओं को संचालन करने में सलंग्न है। गत दिसम्बर महीने में नैष्ठिक दीक्षा के स्वर्ण जयन्ती पर ही दो ब्रह्मचारियों ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपना जीवन समाज के लिए अर्पित किया था, परन्तु कन्याएं प्राय: नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेती, पहले सन् 2002 में 2-3 कन्याओं ने नैष्ठिक दीक्षा ली थी। अब स्वामी जी के अन्दर प्रेरणा से उत्साहित होकर शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण ब्रह्मचारिणी निशा आर्या एवं ब्रह्मचारिणी सुब्रता आर्या ने अत्यन्त श्रद्धा के साथ पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के प्रत्यक्ष सान्निध्य में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं नारी जाति के उत्थान के लिए ग्रहण किया। जब दोनों कन्याएं कन्या गुरुकुल के आचार्य एवं सहेलियों के साथ दीक्षा लेने के लिए निकली उस समय उत्साह का वातावरण अत्यन्त अपूर्व एवं दर्शनीय था, सभी कन्याएं झूम-झूम कर नारे लगाए जा रहे थे साथ में बैण्ड बाजा उनके उत्साह को दुगुना कर रहा था। जब वे यज्ञ में आहुति देकर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी से नए वस्त्र लेकर आशीर्वाद देने के लिए पुन: पण्डाल में आई उस समय सभी का उत्साह अद्भुत एवं अपूर्व था। इस अवसर पर गुरुकुल आश्रम आम सेना कन्या गुरुकुल कोसरंगी के छात्र छात्राओं के साथ अनेक विद्वान खरियार रोड आदि के संभ्रांत नागरिक भी उपस्थित थे। **-आचार्य कोमल कुमार आर्य**

लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

दिनांक 10-4-13 को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस के मौके पर स्कूल में हवन यज्ञ करवाया गया। हवन में आर्य स्कूल के सभी स्टाफ मैंबरस ने आहुति डाली। इस शुभ मौके पर आर्य स्कूल के प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने फोन पर स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजयपाल जी दयौड़ा को आदेश दिए कि स्थापना दिवस की महत्ता के बारे में बच्चों को बताया जाए। इस मौके पर पहुंची स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने सबसे पहले बच्चों को नए सम्वत् की बधाई दी और बच्चों को बताया कि 10 अप्रैल 1875 को स्वामी महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना गांव काकड़वाड़ी मुम्बई में की थी। इसमें सभी आर्य व्यक्ति शामिल हुए। इस मौके पर श्री विजयपाल दयौड़ा (प्रिंसीपल आर्य स्कूल) जी ने भी बच्चों को नए सम्वत् की बधाई दी और बताया कि हमारा नया साल इस बार 11 अप्रैल से शुरू हो रहा है। 1 जनवरी को जो हम नया साल मनाते हैं वो अंग्रेज़ी सभ्यता और अंग्रेज़ों की देन है। मैनेजिंग कमेटी के उप प्रधान श्री रमेश जोशी जी ने भी बच्चों को आर्य समाज स्थापना दिवस के क्या उद्देश्य है ? इसके बारे में जानकारी दी। इस मौके पर दोनों स्कूलों की ब्रांचों के इंचार्ज श्री राकेश कुमार जी श्रीमती अनुबाला जी ने भी अपनी ब्रांचों में स्कूल के बच्चों को नए सम्वत् की बधाई दी और आर्य समाज की स्थापना के विषय में बताया। **-विनोद गांधी मैनेजर**

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

श्री राम आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल, पटियाला में आज 11-04-2013 को नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हवन का आयोजन किया गया। विद्यालय के सभी अध्यापकजन एवं विद्यार्थियों ने इसमें अपनी उपस्थिति दी। हवन करते हुए पंडित ओंकार शास्त्री जी ने आर्य समाज के नियमों एवं महत्त्व के बारे में जानकारी दी। प्रिंसीपल श्री महेश चन्द्र भल्ला ने सभी उपस्थित जनों को आर्य समाज के स्थापना दिवस एवं नववर्ष की शुभकामनाएं दीं और आर्य समाज की निरन्तर प्रगति की कामना की।

-महेश चन्द्र भल्ला प्रिंसीपल

प्रेम भारद्वाज 20वीं बार चुने गए प्रधान

आर्य समाज नवांशहर का 109वां वार्षिक अधिवेशन रविवार को आर्य समाज घासमंडी नवांशहर में सम्पन्न हुआ। वार्षिक अधिवेशन में श्री प्रेम कुमार भारद्वाज को लगातार 20वीं बार सर्वसम्मति से प्रधान चुन लिया व उन्हें कार्यकारणी बनाने सम्बन्धी अधिकार भी दिए गए। हवन यज्ञ के उपरान्त शुरू हुए इस वार्षिक अधिवेशन के दौरान एक प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज नवांशहर की ओर से बच्चियों के साथ बलात्कार करने वाले आरोपियों के लिए फांसी की सजा की मांग भी की गई तथा इस प्रस्ताव को राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के पास भेजने का फैसला भी किया गया।

आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशन में सर्व प्रथम हवन यज्ञ किया गया, जिसमें उपस्थित सभी सदस्यों ने वैदिक मंत्रों की आहुतियां दीं। तदोपरांत मंत्री जिया लाल शर्मा ने सर्व प्रथम वर्ष के दौरान बिछुड़े आर्य समाजियों स्व. राजिन्द्र कुमार प्रेमी, स्व. सुरेश नारद व स्व. राज रानी जी के सम्बन्ध में शोक प्रस्ताव पेश किया। सभी सदस्यों ने तीन बार गायत्री मंत्र का जाप व दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की। तदोपरांत उन्होंने आर्य समाज द्वारा वर्ष 2012-13 में किए गए समाजिक एवं जन कल्याण के कार्यों का ब्यौरा दिया व अपनी वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। इस दौरान वरिष्ठ आर्य समाजी सुरेन्द्र मोहन तेजपाल ने चुनाव की प्रक्रिया शुरू की। संगीता तेजपाल द्वारा प्रधान पद के लिए श्री प्रेम कुमार भारद्वाज के नाम का प्रस्ताव रखा गया, जिसका अनुमोदन रेखा तेजी व नीतू तनेजा ने किया। कोई अन्य नाम न आने पर सुरेन्द्र मोहन तेजपाल ने श्री प्रेम भारद्वाज को वर्ष 2013-14 के लिए आर्य समाज का प्रधान घोषित किया। एक अन्य प्रस्ताव के जरिए आर्य समाज की अंतरंग सभा व कार्यकारिणी बनाने के अधिकार भी श्री प्रेम भारद्वाज जी को दे दिए गए। इस दौरान अपने सम्बोधन में श्री भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज नवांशहर की गतिविधियों में युवाओं का सबसे बड़ा योगदान है तथा युवा वर्ग ही आर्य समाज नवांशहर की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज नवांशहर का पूरे उत्तर भारत की आर्य समाजों में अपना नाम है तथा वह जहां भी जाते हैं, वह युवाओं को आगे लाने की बात करते हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को आगे लाए बिना कोई भी समाज तरक्की नहीं कर सकता। उन्होंने अपने पर विश्वास जताए जाने के लिए सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान मंत्री जिया लाल शर्मा को समाज सेवा के लिए मिले स्टेट आवार्ड पर उन्हें विशेष तौर पर सम्मानित भी किया गया।

मौके पर विनोद भारद्वाज, एडवोकेट देश बंधु भल्ला, जुगल किशोर दत्ता, वीरेन्द्र सरीन, अरविंद नारद, एडवोकेट विकास नारद, एडवोकेट अमित शर्मा, पार्षद ललित मोहन पाठक, कुलवंत राय शर्मा, ललित शर्मा, अरूणेश शर्मा, अक्षय तेजपाल, विपिन तनेजा, अमित तनेजा, डा. एके राजपाल, अनूप कुमार, निपुन भल्ला, दिनेश सैंगर, अविनाश प्रभाकर, विकास तेजी, कृष्ण लाल गोयल, विनायक भारद्वाज, पंकज तेजपाल, रजनीश गुप्ता, अजय सरीन, श्रीमती इंदुमति गौतम, मीना भारद्वाज, कुसुम शर्मा, अचला भल्ला, नीतू तनेजा, अदिति तनेजा, वीरेन्द्र कुमारी, अनुराधा शर्मा, ऋतु तेजपाल, लीना शर्मा, कृष्णा कालिया आदि उपस्थित थीं।

-अरविंद नारद, नवांशहर

बलात्कारियों के लिए मांगी फांसी

आर्य समाज के रविवार को हुए 109वें वार्षिक अधिवेशन के दौरान एक प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज नवांशहर की ओर से बच्चियों के साथ बलात्कार करने वाले आरोपियों के लिए फांसी की सजा की मांग भी की गई तथा इस प्रस्ताव को राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के पास भेजने का फैसला भी किया गया। अधिवेशन के दौरान श्री प्रेम कुमार भारद्वाज जी ने दिल्ली में पांच साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म का मामला उठाया तथा समाज से ऐसे कृत्यों के खिलाफ आवाज बुलंद करने का आह्वान किया। इस दौरान समाज सेवक एवं वरिष्ठ आर्य समाजी सुरिंदर मोहन तेजपाल द्वारा दिल्ली में पांच साल की बच्ची के साथ हुए बलात्कार के कांड का उल्लेख करते हुए बलात्कारियों को फांसी की सजा किए जाने संबंधी प्रस्ताव पेश किया, जिसे सभी सदस्यों ने हाथ उठाकर पास किया। साधारण सभा ने इस प्रस्ताव को राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के पास भेज कानून में जल्द से जल्द संशोधन की मांग भी की, ताकि बलात्कारियों को फांसी की सजा दी जा सके। **-अरविंद नारद, नवांशहर**

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्प्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।